

श्री नंदलालजी की बानी

पहिला भाग

जिन में

प्रतिष्ठा उन महात्मा का संसार में जीवन समिप और उनके
कृत्य को महानिष्ठा के साथ ही उन महात्माओं
के मार्ग के भूल तत्त्व को दूर करने दिया है

और

यात्री में उभरा था उनके जीवन में सत्तों पर और तत्त्व
वैधक भजन, नीति के दोषों के लिए प्राचीन ग्रन्थ
लिखित पुस्तकों में चुनकर मुख्य - लोगों और
राष्ट्रों के अनुमान के अनुसार रखे गये हैं

और

गुरु कृतियों के कहे थे असुते जादों के जगत् में
सकते भी नीति में निश्चय दिये गये हैं

कोई साक्ष्य बिना उदाहरण के इन पुस्तक को न लेंगे।
